मुस्लिम बलिका शिक्षा में अवरोध, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

गजराज सिंह
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
आर0 वी0 डी0 कॉलेज बिजनौर

डा0 जाकिया रफत
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
समाज शास्त्र विभाग
आर0 वी0 डी0 कॉलेज बिजनौर

सारांश –

भारतीय ग्रामीण परिवारों में जिस परिवेश में लड़कियों का पालन पोषण किया जाता है उसें मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने का **नगण्य है** जिसका मुख्य कारण गरीबी है। महिलाओं की शिक्षा में मुख्य अवरोध में माता–पिता का निरक्षर, लिग भेदभाव, सामाजिक और आर्थिक स्थिति आादि। इस सम्बन्ध में डा0 शबाना रिजवी (दिल्ली) ने अपने वाक्य में कहा है कि "मुझे लगता है, कि जिस परिवेश में मुस्लिम लड़कियों की परवारिस की जाती है। उसमें मुस्लिम लड़कियों को सपने कैरियर बनाने से ज्यादा महत्वपूर्ण शादी के बाद घर बनाने का है। जब अधिकतर अभिभावकों की लड़किया 10 वीं कक्षा में आती है, तो वह उनके विवाह की चिन्ता करने लगते है।

मुख्य शब्द – शिक्षा, अवरोध, मुस्लिम महिला

प्रस्तावना –

शिक्षा के क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं की कम भागीदारी एक गम्भीर विषय है,इस मुद्दे पर विचार करने की आवश्यकता है और ऐसे कारणें की खोज करना जो मुस्लिम **बालिकाओ** की शिक्षा में अवरोध पैदा करता है इसी सम्बन्ध में ऑल इण्डिया सर्वे आन हायर एजुकेशन (AISHE सर्वे) 2020–21 से पता चला कि उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्रों के नामांकन में 8 प्रतिशत की कमी आई तथा 20 प्रतिशत **मुस्लिम** आबादी वाले राज्य उ0प्र0 का प्रदर्शन सबसे खराब है यह 36 प्रतिशत की गिरावट आई है,वही मुसलमानों ने केरल में 43 प्रतिशत उच्च शिक्षा के लिए नामांकन कराया।

शिक्षण संस्थानों में मुस्लिम शिक्षकों की गैरमौजूदगी मुस्लिम महिलाओं की अनुपस्थिति को प्रतिबन्धित करती है। केन्द्रीय स्तर पर 56 प्रतिशत सामान्य श्रेणी के शिक्षक नियुक्त है जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग– 32 प्रतिशत, अनुसूचित जाति 9 प्रतिशत और अनुसूचित जन जाति को 2.5 प्रतिशत नियुक्त है जबकि मुस्लिम समुदाय में केवल 5.6 प्रतिशत शिक्षक नियुक्त है।

मुस्लिम बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ता है। जिसमें सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक संस्कृति, अभिभावकों के सहयोग की कमी आदि। इसके अलावा भी बहुत बड़ी संख्या में ऐसे माता–पिता है जों बेटियों को शिक्षा प्राप्त

करने में विश्वास नही रखते है। लड़कियों की शिक्षा के विषय में मुस्लिम समुदाय नाकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। मुस्लिम परिवारों में बालिकाओं को शिक्षा के प्रति हतोत्साहित किया जाता है, जिससे मुस्लिम बालिका शिक्षा के प्रति अपना उत्साह खो देती है। शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से कुछ मुस्लिम बालिकाएँ स्कूलों में नामांकन तो करा लेती है, लेकिन उन्हे शिक्षा प्राप्त नही हो पाती है। कुछ माता–पिता का यह मानना भी है कि उन्हे उच्च शिक्षा प्रदान करा दी जाये तो उनके लिए सुयोग्य वर ढूढना मुस्किल हो जायेगा और दूसरा बड़ा कारण मुस्लिम माता–पिता की आर्थिक स्थिति का कमजोर होन भी मुस्लिम बालिका में अवरोध है।

इस सम्बन्ध में पूर्व में अनेक अध्ययन किये गये है।

रस्तौगी अनिता (1989) ने अपने शोध कार्य में ग्रामीण लड़कियों की उच्च शिक्षा में बाधक सामाजिक तथा शैक्षिक तत्वों का अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण मुस्लिम लड़कियों का कम आयु में विवाह हायर एजुकेशन में अवरोध उत्पन्न करता है।

तसनीम आसमां (2015) ने अपने शोध मे मुसलमान अन्य समुदायों की तुलना में बहुत पीछे है। उनकी व्यवसायिक शिक्षा में उपस्थिति बहुत कम है। यह मुसलमानों के द्वारा आधुनिक शिक्षा में उपस्थिति बहुत ही कम है। शिक्षा को स्वीकार न करने का ही परिणाम है कि वे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक रूप से सबसे अधिक है।

अंजुम (2017) ने मुस्लिम परिवारों में स्त्री शिक्षा नामक लेख मे शिक्षा का महत्व बताया है कि आधुनिक युग में रहते हुए प्रत्येक महिला को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार समाज द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए। क्योंकि इस परिवर्तनशील समाज में शिक्षा के बिना कुछ भी नही हो सकता है।

कुमार निशुज्ञान (2020) ने अपने शोध "मुस्लिम बालिकाओं में उच्च शिक्षा की स्थिति तथा उसमें सुधार हेतु समाज कार्य हस्तक्षेप" अध्ययन कार्य किया है जिसमें शोध से स्पष्ट होता है। कि आज के समय में मुस्लिम बालिकाओं में उच्च शिक्षा के अवसरों, सुविधाओं एवं रोजगार की कमी नही है। फिर भी आर्थिक कमी, धार्मिकता, अभिभावको का उच्च शिक्षा के प्रति उदासीनता आदि कारण मुस्लिम बालिकाओं को उच्च शिक्षा से वंछित करती है।

इस प्रकार उपरोक्त समस्त अध्ययनों में बालिका शिक्षा की स्थिति व अवरोधो के विषय में इंगित किया गया है। परन्तु खेद का विषय है कि ग्रामिण बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में बहुत कम शोध किये गये है। प्रस्तुत शोध कार्य इसी कमी को पूरा करने के लिए एक लघु प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. ग्रामिण मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले **अवरोधो** का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत अध्ययन उ0प्र0 के बिजनौर जनपद के विकासखण्ड जलीलपुर को चुना गया है जिसमें प्रस्तावित अध्ययन ब्लॉक जलीलपुर के दो मुस्लिम बहुल गांव है जिसमें ग्राम रसूलपुर नंगला, रवाना का चयन शैक्षिक, जातिगत, सामाजिक, आर्थिक स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए तुलनात्मक रूप से किया गया है। ग्राम रसूलपुर नंगला में मुस्लिम उच्च जाति, उच्च शैक्षिक स्थिति तथा सामान्य आर्थिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जबकि ग्राम रवाना में मुस्लिम पिछड़ी तथा निम्न जातियों एवं निम्न आर्थिक व शैक्षिक स्थिति के लोग निवास करते है जो गंगा नदी के समीप **होने** के कारण बाढ से प्रभावित रहता है।

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तावित शोध में अन्वेषणात्मक, वर्णात्मक अभिकल्प पर आधारित होगा।

निदर्शन –

अध्ययन की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए बिजनौर जनपद के विकास खण्ड जलीलपुर के ग्राम–रसूलपुर नंगला, रवाना के प्राथमिक **विद्यालय** से अध्ययनरत 100 मुस्लिम बालिकाओं के अभिभावकों को लाटरी विधि (दैव निर्देशन) के द्वारा चयन किया गया है।

शोध के निष्कर्ष निम्नबत रहे है–

तालिका – 1

पर्दा प्रथा मुस्लिम बालिका शिक्षा में क्या बाधय

क्रम सं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	65	65.00
2.	नही	25	25.00
3.	कोई जवाब नही	10	10.00
	कुल	100	100.00 प्रतिशत

स्त्रोतः– अनुसंधान कर्ता द्वारा एकत्रित आँकड़े

उपरोक्त तालिका के आँकड़ो के आधार पर कहा जा सकता है कि मुस्लिम **बालिका** शिक्षा में पर्दा तथा प्रथा भी अवरोध उत्पन्न करती है। जिसमें 65 प्रतिशत **उत्तरदाताओ** ने यह स्वीकार किया है वह 25 प्रतिशत उत्तरदाता जो आधे से भी कम है, यह स्वीकार किया है कि पर्दा प्रथा **बालिका** शिक्षा में बाधक नही है। इस तथ्य के साथ 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई उत्तर नही दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि एक बहुत बड़ा हिस्सा यह मानता है कि पर्दा प्रथा मुस्लिम बालिका शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करता है।

तालिका – 2

मुस्लिम बालिका शिक्षा में सामाजिक कुरीतियाँ द्वारा अवरोध पहुचाने से सम्बनधित प्रतिक्रिया

मुस्लिम बालिकाओं के अभिभावकों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या सामाजिक कुरीतियाँ बालिका शिक्षा में अवरोध पहुँचाती है। इस सन्दर्भ में प्राप्त अभिभावको प्राप्त तथ्य इस प्रकार है–

क्रम सं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	सहमत	69	69.00
2.	असहमत	12	12.00
3.	अनिश्चित	19	19.00
	कुल	**100**	**100.00 प्रतिशत**

स्त्रोतः– अनुसंधान कर्ता द्वारा एकत्रित तथ्य

उपरोक्त तालिका के आँकडो के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि मुस्लिम बालिका शिक्षा में सामाजिक कुरीतिया भी अवरोध उत्पन्न करती है। जिसमें अवरोध होने की बात को 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है वही 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति को दर्शाया है। वही इस तथ्य के साथ भी 19 प्रतिशत वे सभी उत्तरदाता है जिन्होने इस तथ्य को अनिश्चित माना है और कोई भी उत्तर नही दिया है। जो इस बात की और संकेत करता है। कि जिन्होने इस सामाजिक कुरीतियों को स्वीकार कर लिया है।

तालिका – 3

घरेलू हिंसा बालिकाओं की शिक्षा में अवरोध से सम्बन्धित प्रतिक्रिया

क्रम सं.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	सहमत	46	46:00
2.	असहमत	13	13:00
3.	कोई जवाब नही	41	41:00
	कुल	100	100:00

स्त्रोत: – अनुसंधान द्वारा एकत्रित आँकड़े

उपरोक्त तालिका में घरेलू हिंसा मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा में अवरोध से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वह इस तथ्य से सहमत है,घरेलू हिंसा बालिका शिक्षा में अवरोध है जबकि 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी सहमती को दर्शया है और इसी के साथ 41 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता है जिन्होने घरेलू हिसा पर अपना कोई जवाब नही दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि घरेलू **हिंसा** के कारण बालिकाओं की शिक्षा में अवरोध उत्पन्न होता है। घरेलू हिंसा के कारण भी बालिका शिक्षा का स्तर निम्न है। जब हम सहमत उत्तरदाता 46 प्रतिशत और जवाब नही दिया। उत्तरदाता 41 को जोड़ते है तो 87 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे पाये जाते है जो घरेलु हिंसा के शिकार हुए है। यह संख्या अपने आप में बहुत बड़ी है।

निष्कर्ष – मुस्लिम बालिकाओं का शिक्षा का स्तर अन्य धर्म की बालिकाओं से विशिष्ट है,इस कारण उनके शिक्षा सम्बन्धी अवरोध अन्य से अलग सन्दर्भ रखता है।मुस्लिम बालिका समाज की मुख्य धारा से अलग–अलग पड़ गयी है। मुस्लिम बालिका शिक्षा में पिछड़ापन होने के अनेक अवरोध है जैसे सामाजिक कुरीतियाँ, बुर्का प्रथा, रूढिवादिता, अशिक्षा, बाल–विवाह, तीन तलाक, **पितृसत्तात्मक** समाज, धार्मिक फतवे, **लैगिंक** भेदभाव, घरेलू अहिसा, पिता की कमजोर आर्थिक स्थिति मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करता है। मुस्लिम बालिकाओं में शिक्षा के अवसर, रोजगार अन्य अवसरों की कमी नही होने के बाद भी कुछ कारण अन्य शिक्षा पाप्त करने में **बाधक** है। माता–पिता की शिक्षा के प्रति अभिरूचि, बालिका शिक्षा रोजगार के प्रति जागरूकता का नगण्य होना है। यही सभी उपरोक्त कारण मुस्लिम बालिका शिक्षा प्राप्त करने में अवरोध उत्पन्न करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची: –

1. **बिजभूषण** जे0 (1980) 'मुस्लिम **वूमेन** इन पर्दा एंड आउट ऑफ इट' विकास पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।

2. जोया हसन (2003) मुस्लिम समाज में महिलाओं की मदहाली का कारण धार्मिक नही आर्थिक, हंस दिल्ली, अगस्त।

3. रितु मेनन तथा जोया हसन अनइक्वल सिटिजन्सः ए स्टडी ऑफ मुस्लिम वुमेन इन इण्डिया 2004 ओ0 यू0 पी0 नई दिल्ली।

4. रजिया पटेल इण्डियन मुस्लिम वुमेनः हिस्टोरिक डिमांड फार चेंज ई0 पी0 डब्लू0 ग्स्प्ट (44) 2009।

5. आसिफ एम0 (2010) 'माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम छात्राओं की भौतिक **आकांक्षाओ** एवं समस्याओं का अध्ययन' पी0 एच0 डी0, शिक्षा शास्त्र सी0 सी0 एस0 यूनिवर्सिटी, मेरठ।

6. **नाइक** जाकिर (2010) इस्लाम में औरत के अधिकार अल हसनात बुक्त प्रा0ति दरीयागंज दिल्ली।

7. ज्योति पुनवानी मुस्लिम वुमेनः हिस्टोरिक डिमांड फार चेंज ई0 पी0 डब्लू0 (42) 2016।

8. राम आहूजाः सामाजिक समस्याएँ (तृतीय संस्करण) रावत पब्लिकेशन जयपुर (2023)।

शोधार्थी
गजराज सिंह
आर0 पी0 डी0 कॉलेज बिजानौर (उ0प्र0)
इमेल – gajraj2983@gmail.com
मोबाइल न0 – 9837676926
पत्रचार का पता
नाम – गजराज सिंह
पिता का नाम – श्री मारेह सिंह
पता – बाल विकास महाविधालय कुतुबपुर **गांवडी ब्लाक** जलीलपुर चाँदपुर
जिला – बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
इमेल – gajraj2983@gmail.com
मोबाइल न0 – 9837676926